PANEER

SWEETS

(Part-1)

MILK

COFFEE

TEA

आर.टी.आई. (प्रश्न मंच)

- ले. पूज्य पाद आचार्यदेव
श्री उदयवल्लभ सूरि जी

इस विभाग में आज एक ऐसे प्रश्न की चर्चा की जा रही है, जो आज के समय की माँग है।'अंडे को शाकाहारी एवं दूध को मासांहारी' पुरवार करने के लिए विश्व में कई लोगों ने एड़ी-चोटी का जोर लगा दिया है। थोड़े दिन पूर्व विद्वद् शिरोमणि आचार्य भगवंत श्री जयसुंदर सूरीश्वरजी महाराज सा. के द्वारा लिखित खत मिला था।

जिसमें लिखा था कि 'आप Vegan (विगन) के बारे में (धर्मप्रेमी संदेश के माध्यम से) कुछ प्रकाश डालने का प्रयास करो।'

आचार्य भगवंत की प्रेरणा पाकर हम दो भाग में इस प्रश्न का उत्तर प्रेषित कर रहे हैं। पाठक बड़ी सावधानी से इस विभाग में दिये प्रश्नोत्तर को एवं तर्कों को स्मृतिपथ में संजो कर रखें।

प्रथम भाग में विद्वान् आचार्य भगवंत श्री उदयवल्लभ सूरि. जी द्वारा प्राप्त उत्तर उन्हीं के शब्दों में प्रकाशित कर रहे हैं और दूसरे भाग में अन्य लेखों के माध्यम से प्राप्त सत्य एवं तथ्य को उजागर करने का प्रयास करेंगे। प्रश्न का समाधान करने के लिए हम आचार्यश्री के ऋणी रहेंगे।

प्रश्न : प्राणी के शरीर में से निकलने वाले रक्त और माँस का आहार यदि मांसाहार की श्रेणी में गिना जाता है तो प्राणी के शरीर में से निकलने वाले दूध को पीने वाले को मांसाहारी क्यों नहीं माना जायें???

आखिर तो रक्त हो चाहे दूध हो दोनों प्राणी में से ही प्राप्त हो रहे हैं ना?

उत्तर : अंग्रेजों के शासनकाल से इस देश में मांसाहार के प्रचार-प्रसार के लिए विभिन्न नीतियों का आश्रय लिया गया, उसी में से एक यानी 'दूध को मांसाहार के रुप में प्रचारित करना'

यह विचार की जड़ कहाँ है, वह देखना दिलचस्प होगा। यूरोप के देशों ने शाकाहार के प्रचार का एक बड़ा बिगुल बजाया और शाकाहारियों के बड़े-बड़े संगठन खड़े हुए। वे लोग अपने आपको Vegetarian (शाकाहारी) से भी आगे Vegan (विगन) के रूप में प्रस्तुत करने लगे हैं। वे संगठन भारत देश के मांसाहार त्यागियों से भी अपने आप को ऊँचा बताने लगे।'दूध पीनेवाले मांसाहार त्यागी लोग भी मांसाहारी है क्योंकि दूध भी रक्त या मांस की तरह प्राणी के देह में से ही पाया जाता है।' ऐसी भ्रमपूर्ण प्रचार जाल में अच्छे-अच्छे मांसाहार त्यागी महापुरुष भी फँसने लगे।

यंत्रवाद का अतिशय प्रचार होने के बाद से पशु अनुपयोगी (फालतू) बनने लगे फिर भी दूध एवं दूध निर्मित उत्पादों के चलते दुधारु पशु आज भी आर्थिक रूप से उपयोगी हैं। दूध को मांसाहार के रुप में यदि जोर-शोर से प्रचारित किया जाये तो

एक ओर शाकाहारी लोगों में दूध की अरुचि पैदा हो और दूध की जुगुप्सा पैदा होने पर दूध की माँग कमजोर हो। दूध की मांग कमजोर होने के बाद दूधारू पशु भी अनुपयोगी (फालतू) साबित हो तो पशुप्रधान भारतदेश और पशुकेन्द्रित उनकी अर्थव्यवस्था धराशायी हो, बूचड़खानों में पशु को काटने में सरलता रहे।

दूसरी ओर शाकाहारी प्रजा में मांसाहार की जुगुप्सा कमजोर पड़ने लगेगी, क्योंकि 'आज तक दूध पीने के द्वारा हम पहले भी मांसाहार कर चुके हैं तो अब मांस-अण्डे खाने में क्या दिक्कत है?' ऐसा विचार उनकी मांस नहीं खाने की दृढ़ता में कमजोरी लाकर उन्हें पतित बना देगा। [वास्तव में 'शाकाहार' शब्द भी भ्रम पैदा करने के लिए बनाया गया है। मांसाहार की पुष्टि के लिए ही वह शब्द प्रचारित किया गया है। मांसाहार का विरोधी शब्द असलियत में तो 'अन्नाहार' है। 'शाकाहार' शब्द का भ्रामक प्रचार-एक स्वतंत्र विषय है इसलिए उसके ऊपर टिप्पणियाँ बाद में कभी करेंगे।]

मुख्य बात तो यह है कि दूध को मांसाहार के रुप में गिनने में कोई ठोस तर्क नहीं है। दूध प्राणी के देह में से मिलता है वह बात सच्ची होने पर भी आधी सच्ची है। दूध प्राणी के देह में से नहीं, मादा पशु के देह में से मिल रहा है। मांस नर-मादा दोनों के देह में से मिलता है। मांस और दूध बीच का यह एक प्राकृतिक भेद है।

खाया हुआ खुराक - रस, रक्त, मेद, मांस, मज्जा, वीर्य और ओजस में रूपांतरित होता है और उसे इस प्रक्रिया में से गुजरने में, प्रत्येक धातु बनने में 5-5 दिन लगने से 30 दिन लग जाते हैं, जबकि गाय या अन्य दुधारु पशु को जो खुराक खिलाया जाता है, वह खुराक उसी दिन दूध में रूपांतरित होकर थन में आ जाते है। उसके बाद खुराक के बाकी बचे हिस्से में से अन्य धातु (रक्त/मांस इत्यादि) बनती है, इसलिए 'दूध का निर्माण रक्त-मांस में से होता है' वह बात बेबुनियाद है।

मांस को प्राप्त करने के लिए प्राणी को कांटना या मारना पड़ता है और पीड़ा-यातना देनी पड़ती है। मांस पाने का प्रयास जब कसाई करता है तब पशु सख्त प्रतिकार करता है। दूध के बारे में देखें तो वस्तुस्थिति बिल्कुल विपरीत है। दूध अर्जित करने में पशु को किसी भी पीड़ा से गुजरना नहीं पड़ता। उनकी ओर से कोई प्रतिकार भी नहीं होता है बल्कि वे दूध लेने आये पशुपालक के अनुकूल बन जाते हैं। हाँ, दूध नहीं लेने पर पशु को अवश्य पीड़ा होती है।

पशु के देह में उत्पन्न हो रहा दूध अन्यार्थ ही होता है। स्तनछिद्र में से दूध निकालना पशु के हित में ही होता है। दूध निकालने के लिए प्रकृति ने ही मादा पशु के दूधकारक अवयव में छिद्रों का निर्माण किया है। जिससे दूध निकालकर उसका उपयोग किया जा सके।

गाय संपूर्ण रूप से शाकाहारी प्राणी है। उसके सामने दूध की भगोनी रखने पर वह चप-चप करके सारा दूध पी जाएगी, लेकिन यदि रक्त से भरकर कोई भगोनी रखी तो वह मुँह फेर लेगी, देखेगी तक नहीं। इस क्रिया के द्वारा गाय खुद ही पुकार कर रही है कि दूध और रक्त में मूल से ही बड़ा अंतर है।

दूध यदि रक्त या मांस से बना होता तो मांसाहारी लोगों को पोषण और स्वास्थ्य लाभ पाने के लिए दूध पीने की आवश्यकता क्यों खड़ी होती हैं? सिर्फ खून-मांस से उन्हें क्यों नहीं चलता है? रक्त और दूध में समान गुण नहीं होने के कारण ही मांसाहारी लोगों को भी पोषण के लिए दूध पीना पड़ता है। अमांसभक्षी लोगों को दूध पीने के बाद पोषण के लिए मांस खाने की आवश्यकता रहती नहीं है। दूध पीने वाले और मांस जिंदगीभर नहीं खाने वाले लोग कुपोषण जन्य रोगों से ग्रसित नहीं होते हैं, जबकि मांसाहारी लोग दूध नहीं पीने पर कुपोषणजन्य और वायुजनित रोगों के शिकार बनते हुए देखे हैं। मांस का प्रोटीन उसे रोगों से बचा नहीं पाता है। इस दृष्टि से भी दूध और मांस के बीच स्पष्ट अंतर दिखाई देता है।

मानवसृष्टि में एक सामान्य परिपाटी सर्वत्र देखने को मिलती है। जन्म के तुरंत बाद से ही कुछ महिनों तक बच्चा केवल माँ के दूध का ही भोजन लेता है और उसी से अपने देह की पुष्टि एवं विकास करता है। तब बच्चा माँ का खून पी रहा है और मांसाहारी है ऐसा भाव किसी के भी मन में नहीं पैदा होता है, क्योंकि बच्चा दूध पीता है और दूध रक्त से भिन्न है।

जैनाचार्य श्री हरिभद्रसूरिजी महाराज स्वरचित अष्टक प्रकरण नामक ग्रंथ में 17 वें मांसभषण दूषण अष्टक में इस मुद्दे की चर्चा कर चुके हैं। (अहो जिनशासनम्-धन्य है जिनशासन, कि हजारों साल पूर्व हुए जैनाचार्य जी इस बवंडर को आने से पहले ही भाँप गये थे।) वहाँ पर प्रश्न उपस्थित हुआ है कि, प्राणीजन्य होने से यदि रक्त एवं मांस का आहार नहीं कर सकते हैं तो फिर दूध कैसे पी सकते हैं? क्योंकि वह भी तो प्राणीजन्य पदार्थ से समानता रखता है।

इसका उत्तर आचार्यश्री ने बड़े ही सुंदर तरीके से दिया है। स्वमाता और स्वपत्नी दोनों महिला के रुप में समान होने पर भी तुल्य व्यवहार नहीं होता है। पत्नी भोग्या गिनी जाती है, जबकि माता पूज्या होती है।

स्त्री के रूप में समान होने पर भी जैसे वहाँ भेद पड़ता है, वैसे ही प्राणीजन्य समानता होने पर भी रक्त और दूध में जमीन-आसमां जैसा अंतर है, अतः दूध मांसाहार नहीं है। इसमें शक की कोई गुंजाईश भी नहीं है।

आर.टी.आई. (प्रश्न मंच)

(Part-2)

ले. मुनि निर्मोह सुंदर विजय

पूर्व के अंक में 'दूध भी मांसाहार है।' ऐसा प्रचार करने वालों के प्रश्नों का उत्तर देना शुरू किया था।

उसी शृंखला में इस अंक में भी 'विविध कुतर्कों के माध्यम से दूध को मांसाहार के रुप में प्रचारित करने वाले की कुतर्क जाल कैसी है', वह बतायेंगे। 'दूध को मांसाहार' के रुप में प्रचारित करने वाले किस आधार पर दूध को हिंसा से जनित एवं मांसाहार तुल्य बताने पर तुले हैं, आज उसकी बात करना चाहेंगे।

1. वर्तमान में गाय का दूध लेने के लिए गाय पर भयानक अत्याचार किया जाता है। भूतकाल में लोग गायों को घर-घर में पालते थे और बछड़े के द्वारा दूध पीने के पश्चात् गायों से दूध लिया जाता था। अभी के काल में सबकुछ प्रोफेशनल हो जाने से मशीन से दूध लिया जाता है और लेते वक्त गाय के थन का खून भी उस में आ जाता है।
2. गाय को दूध उत्पादक मशीन समझा जाता है और दूध के जरिये ज्यादा से ज्यादा मुनाफा कमाने की सोच होने से गाय का दूध हिंसा जनित है। पीना नहीं चाहिए।
3. अन्य प्राणियों की तरह गाय भी बछड़े को जन्म देने के बाद दूध देती है और वे दूध उनके बछड़े के लिए होता है। पृथ्वी पर सिर्फ मनुष्य जाति ही ऐसी है जो अन्य जाति के दूध पर अपना जीवन गुजारती है।
4. ज्यादा से ज्यादा दूध पीने के चक्कर में गायों को कृत्रिम पद्धति से गर्भवती बनाया जाता है।
5. 80 प्रतिशत बछड़ों का कत्ल कर दिया जाता है। बीफ इण्डस्ट्रीज वालों को बछड़े बेच दिये जाते हैं। इसलिए दूध पीना पाप है।
6. बछड़ों को जन्म के तुंरत बाद गाय से अलग कर दिया जाता है, जिससे अधिक से अधिक दूध पाया जा सके।
7. पाँच से छ: साल के पश्चात् गाय 30 प्रतिशत दूध कम देती है और उसे बूचड़खानों में बेच दिया जाता है। सामान्यत: गाय की औसतन आयु 15-20 वर्ष होती है।
8. गाय ज्यादा दूध दे, इसलिए उसे हार्मोन एवं एन्टिबायोटिक के इन्जेक्शन दिये जाते हैं।
9. विदेशों में बहुत सारी डेयरी के बाजु में ही बूचड़खाने होते हैं।
10. गाय मीथेन गैस पैदा करती है। (गाय जब गोबर देती है तब उसमें से मीथेन गैस पैदा होती है।) जो पर्यावरण को नुकसान पहुंचाती है।
11. मानवीय जीवन के लिए दूध आवश्यक नहीं है। यदि आवश्यक होता तो कुदरत क्यों माँ का दूध (बच्चे की) 2-3 साल की उम्र होने पर बंद कर देता है?
12. डेयरी की चीजें खाने से कॉलस्ट्रोल,

चर्बी एवं प्रोस्टेट कैंसर के मरीज़ बढ़ रहे हैं।

13. दूध मिलावटी आने लगा है, इसलिए दूध पीना पाप है।
14. दूध पाने के लिए गायों को, भैंसो को पालना पड़ता है और उसको जिंदा रखने के लिए खिलाना-पिलाना पड़ता है। इसके कारण वन कटाई होती है। चारों में अधिक घास जाने के कारण सूखा पड़ता है। पशु कृषि के कारण ही देश बर्बाद होते हुए देखे हैं। Animal Agriculture बुरा है, चाहे वह मांस के के लिए हो चाहे दूध के लिए।
15. पानी की किल्लत पशु कृषि के कारण पड़ती है। 1 लीटर दूध की प्राप्ति के लिए 2941 लीटर पानी का दुरुपयोग होता है। घरेलु उपयोग में 3.6प्रतिशत पानी एवं पशुकृषि में 92.6प्रतिशत पानी की खपत होती है। फसल उत्पाद, चराई इत्यादि में पानी जाने के कारण पानी खत्म हो रहा है।
16. पशु कृषि के कारण जलवायु परिवर्तन की दिक्कत आ रही है। दूध पीने वाले और मांस खाने वाले सभी को ग्लोबल वार्मिंग बढ़ाने का दोष लगता है।
17. प्रदूषण भी बढ़ता है पशुओं के मल-मूत्र उत्सर्जन से। 1.2 लीटर दूध के कारण 10 लीटर से ज्यादा गटर के पानी में वृद्धि हो रही है।

भारत में देश के पशु कृषि में 19,09,00,000 गाये हैं। 11 करोड़ भैंसे है। साढ़े 6करोड़ भेड़ और 13.5 करोड़ बकरियाँ है। 120,00,000 अन्य पशु है। 16,54,0000000 करोड़ लीटर दूध का उत्पादन पूरे भारत में हो रहा है। सन् 2016-2017 में प्रतिदिन 45 करोड़ लीटर से ज्यादा दूध पैदा हो रहा था तो सोच लो कि गटर के जल में कितनी वृद्धि हुई होगी? चीज़, पनीर में से निकलने वाला जल, सभी प्रकार के शुद्ध जल के स्रोतों को प्रदूषित करने का काम कर रहा है। मछलियाँ मर रही हैं ऐसे जल के कारण बड़े-बड़े इलाकों में डेड ज़ोन बन रहे हैं। ऑक्सीजन का अभाव हो रहा है।

18. जैन लोग विगई त्याग में धर्म मानते हैं और दूध विगई है, तो दूध पीने से पाप लगता है वह सिद्ध हो गया लेकिन फिर भी नासमझ जैन भगवान पर दूध का अभिषेक, घी का दीया इत्यादि करके महापाप के भागी हो रहे हैं।

ऐसे-ऐसे अनगिनत कुतर्क विगन समर्थक दे रहे हैं। कैसे भी करके वे लोग अपनी बातों को सिद्ध करना चाहते हैं और उसके लिए सत्यों को एवं संख्या को तोड़-मरोड़ कर पेश करना भी उनके लिए जायज है।

इसका निष्कर्ष अगले अंक में आयेगा। इन लोगों के कुतर्कों का प्रत्युत्तर देने के लिए धर्मप्रेमी संदेश प्रतिबद्ध है। अहिंसा में किये गये अविवेक का मिश्रण नहीं अपितु मिलावट का पर्दाफाश धर्मप्रेमी संदेश अवश्य करेगा।

दूध पीने वाले को महापापी करार देने वाले इन लोगों के ढ़ोंग को अगले अंक में उजागर किया जायेगा। दूध बंद करवाने के पीछे कैसे-कैसे बड़े षड़यंत्रकारी लगे हुए हैं उसकी चर्चा एवं उसके षड़यंत्र की चर्चा अगले अंक में ....

(क्रमशः)

सांप्रत सवालों का सटीक समाधान

R.T.I. - प्रश्न मंच

- ले. मु. निर्मोह सुंदर विजय

प्रश्न- क्या गाय का दूध पीना मांसाहार करने जैसा पाप है?

उत्तर: पूर्व के अंकों से चले आये इस प्रश्न का आज सविस्तार उत्तर बताना चाहेंगे।

भारत देश अनादि काल से स्वाधीन एवं समृद्ध रहा है, साथ में यह बात भी इतनी ही सच्ची है कि भारत देश को गरीब, पराधीन एवं कंगाल बनाने के हर संभव प्रयास अन्य राष्ट्रों के द्वारा या अन्य लोगों के द्वारा होते रहे हैं।

भारत देश की अर्थव्यवस्था की नींव कृषि में एवं भारत देश की धर्म व्यवस्था की नींव ऋषि में समाहित है।

भारत की जनता स्वस्थ-नीरोगी एवं दीर्घायु रहती थी, जिसका राज पशुपालन एवं पशु प्यार में छिपा था।

भारत की संस्कृति किसी ने उधार दी हुई नहीं थी, किंतु वह संस्कृति पूर्ण ज्ञानी पुरूषों के द्वारा निर्धारित की हुई थी। भारत की भाषाओं में विविधता होने पर भी वे सारी भाषा या तो प्राकृत या संस्कृत इत्यादि मूल भाषा में से ही निकली होने से एकता द्योतित करती है।

भारत देश को खत्म करने के लिए, घुटने के बल लाने के लिए विविध षड़यंत्र किये गये, उसमें से एक है दूध एवं दूध से बने सारे उत्पादों से भारतीय जनता को दूर करना। मांसाहारी बना देना। मांसाहारी बनने के बाद वे आसानी से अपनी जड़ों से छूट जायेंगे। पशु आधारित कृषि एवं अर्थव्यवस्था खत्म करना बाद में आसान बन जाएगा। स्वास्थ्य भी खत्म होने से बहुत बड़ा दवाइयों का व्यापार बढ़ेगा क्योंकि 130 करोड़ लोगों का मार्केट यहीं पर मिलेगा। इस षड़यंत्र में कैसी बड़ी-बड़ी संस्थाएँ जुड़ी हुई है, उसका पता कुछ दिन पूर्व लगा।

उन संस्थाओं का मकसद भी कितना घिनौना है, उसकी भी जानकारी मिली। अपने मकसद में उन्हें सफलता भी मिली। ये सब बातें हम पाठकों से शेयर करना चाहेंगे।

सबसे पहले तो उन षड़यंत्रकारियों द्वारा फैलाये गये कुतर्क के जाल को तोड़ने का कार्य करेंगे। उन्होंने गाय का दूध ना पीने के पीछे जो प्रश्न खड़े किये हैं, उसके उत्तर देना चाहेंगे।

प्रश्न नं. 1 दूध लेने के लिए गाय पर अत्याचार किया जाता है एवं मशीन से दूध लेने पर खून भी आ जाता है, इसलिए दूध पीना - खून पीने जैसा है।

उत्तर: हमारा अभी विहार चल रहा है। ठण्ड के दिनों में कड़ाके की सर्दी से सभी परेशान हैं। लगातार चल रहे विहार के दिनों में हम छोटे से छोटे गाँव को स्पर्श कर रहे हैं। गायों के आगे उसका मालिक अलाव जला कर उसकी ठण्ड

Scanned by CamScanner

उड़ाने की कोशिश करता देखने पर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। लोग अपनी ठण्ड उड़ाने को अलाव जलाते कई बार देखे हैं लेकिन पशु को अपना पारिवारिक सदस्य मानकर उसे कपड़ा पहनाना, उसे प्यार करना, उसकी संभाल करना और अलाव तक जलाना देखकर बहुत खुशी हुई। गायों पर अत्याचार की बात ही गलत है।

वैसे तो स्कूल में पढ़ते बच्चे को भी शिक्षित करने हेतु उस पर भारी बोझ लादा जाता है। सुबह-सुबह में उसे उठाया जाता है। कभी अध्यापकों की वह मार भी खाता है। कौन सी ऐसी जगह है, जहाँ कथित अत्याचार ना हो। क्रिकेटरों को भी प्रेक्टीस में कभी-कभी चोटिल होना पड़ता है।

इस अत्याचार के सामने का पक्ष देखे तो गाय की सुरक्षा, चारे-पानी की व्यवस्था सब कुछ वह अत्याचार (?) करने वाला ही तो संभालता है ना?

बैल को हल में जोतना अत्याचार

बैल को बेंत से मारना अत्याचार

बैल से काम कराना अत्याचार

बैल को गाड़ी में जोतकर, उसके द्वारा बोझ उठवाना अत्याचार लेकिन बैल का बूचड़खाने में कत्ल कर देना अत्याचार नहीं अपितु व्यवसाय!!! यह इन षड्यंत्रकारियों की घिनौनी चाल। छोटे-छोटे कष्टों के नाम पर जीवदया प्रेमी को आरोपी के कठघरे में रख देना और बडी कत्ल पर चुप्पी ओढ़ लेना। बैल को इस अत्याचार से मुक्त करने के बाद उन बैलों को निकम्मा बना दिया।

बाद में उन बैलों का क्या हुआ, वह सब कोई जानते ही है। उस बूचड़खाने के सामने कोई भी एक लफ्ज़ भी निकाल नहीं रहा है, वह बड़े आश्चर्य की बात है। जो हालत बैल की हुई (की गई) वो ही हालत वे लोग अब गाय की करना चाहते हैं।

दूध लेना अत्याचार मगर कत्ल कर देना धंधा है और धंधे में सब कुछ जायज है। Everything is fair in love and war में एक चीज़ और जोड़नी पड़ेगी - "धंधा"।

किसानों को बेवकूफ बनाने के लिए कृषि शब्द को पशु के साथ जोड़ दिया। Fish Farming, Cattle Farming। अन्नदाता किसान अब मांसदाता बनने लगा।

थोड़े से अत्याचार के नाम पर कितना बड़ा अत्याचार। कपड़े गंदे हो तो धोने पड़ते है। सिरदर्द करता हो तो बाम लगानी पड़ती है। लेकिन गंदे कपड़े के नाम पर कपड़े निकाल कर नंगे होने की या सरदर्द के नाम पर सिर ही काटने की बात तो पागलपन ही कहा जाएगा। अत्याचार कम करने की सलाह देने के बजाय गाय-बैल को ही (कत्ल करने के लिए) निकम्मा बना देना, कितना उचित???

दूध में खून आता है वह गलत है, लेकिन एक-दो बूँद खून का शोर-गुल मचाकर गाय का पूरा खून चूस लेना कितना उचित माना जायेगा???

भारत देश में आज भी मशीन लगाकर दूध निकालने वाले कम ही मिलते है और वो मिले तो भी उसका दूध अलग कैसे कर सकते हैं? दूध पीने का ही बंद कर देंगे तो रोग प्रतिरोधक क्षमता नष्ट होगी और वह नष्ट होने पर मजबूरन रक्त-मांस इत्यादि से बनी गोली खानी पड़ेगी इससे तो अच्छा है कि एक-दो बूँद खून से मिश्रित दूध पिया जाये।

बड़े नुकसान से बचने के लिए छोटे नुकसान को स्वीकार करना बुद्धिमानी का लक्षण है।

आज की ही बात करूँ (5/1/2019) तो एक पंछी पतंग की डोर में पैर फँसने पर पेड़ पर पूरी रात लटका हुआ था। तड़प रहा था छूटने के लिए। जीवदया प्रेमी को पता लगा, उसे बचाने के लिए लम्बी बांस (सेलड़ी) लेकर आये जिस पर धारदार ब्लेड़ लगी हुई थी।

पंछी को यदि ब्लेड़ का ऊपरी हिस्सा लग भी जाये तो भी वह जीवदया प्रेमी को दोष नहीं दे सकते। उसने जैसे ही डोर काटी तुरंत पंछी उड़ गया ..... लेकिन यहाँ कोई प्रश्न कर सकता है कि पंछी के पैर में तो डोरा बँधा हुआ रह गया ना? भले ही वह पंछी डाल से छूट गया लेकिन बँधी हुई डोर का क्या? तो इसका उत्तर यही रहेगा कि डोर रही तो भले रही मगर वह पंछी तो बच गया। ड़ोर पैर में रहना

Scanned by CamScanner

छोटा नुकसान, पंछी पेड़ में लटकता रहे बड़ा नुकसान।

ठीक इसी प्रकार एक-दो बूँद खून दूध में आ जाये छोटा नुकसान मगर गाय निकम्मी होने से कटने के लिए चली जाये बड़ा नुकसान। बैल को हंटर से मारना, हल में जोड़ना छोटा अत्याचार लेकिन बैल के स्थान पर ट्रैक्टर लाना और बैल को कसाई को बेचना-बूचड़खाने भेजना बड़ा अत्याचार।

छोटा अत्याचार भी जिसे अखरता हो वह साधु बनने के लिए सादर आमंत्रित हैं।

प्रश्न नं. 2 गाय को दूध उत्पादक मशीन समझा जाता है। दूध के जरिये मुनाफा कमाने की सोच है इसलिए गाय का दूध हिंसा जनित है।

उत्तर: कितना हास्यास्पद तर्क दे रहे हैं विगन वाले। दूध का विरोध करने वालों का भी एक बाजार है। आप यू-ट्यूब से लेकर सभी जगह देख सकते हैं। Top 7 - Reason For Go to Vegan - के नाम से एक विडियो जारी किया गया है उन लोगों द्वारा। जिसमें उन लोगों का उद्देश्य स्पष्ट तौर पर प्रगट हो जाता है। विज्ञापन के अंदर सबसे पहला कारण यह बताते हैं कि - नये, नये स्वादों की खोज।

* पनीर की जगह टोफु (Toffu)
* छाछ की जगह नारीयल पानी
* सोयावीन से बना दही
* बादाम-काजु के आटे से बना बटर और चीज़।
* गेहूँ-सोया से बना शाकाहारी मांस। यहाँ पर इन लोगों की गंदी मानसिकता आखिर उजागर हो ही जाती है।

दूध को मांसाहार बताने का झूँठा प्रचार छोटी बात नहीं है। अन्तर्राष्ट्रीय षड़यंत्र के उद्देश्य से जुड़ा हुआ वह एक बड़ा मुद्दा भी है। भारतीय प्रजा की शारीरिक-मानसिक-आर्थिक शक्ति को कमजोर बनाने हेतु बलप्रदायक तमाम चीज, वह चाहे विविध धान हो या घी-दूध-छाछ हो, उन सबका नाश करना। प्रजा को मिल रहे उन पदार्थों की आपूर्ति बंद करनी, खुद के द्वारा निर्मित+प्रेषित मिलावट वाले दूध पाउडर इत्यादि हर घर में घुसाना। उन पदार्थों के उत्पादन से जुड़े लोगों के व्यवसाय का स्रोत कैसे नष्ट करना? इन सबकी सोची-समझी साजिश अब उजागर होने लगी है। इसका ताजा उदाहरण 2 दिसम्बर 2018को हुआ Vegan Food Festival है। पत्रकार महोदय श्री संजय भाई वोरा ने इस षड़यंत्र का पर्दाफाश किया तब पता चला कि तथाकथित जीवदया प्रेमी गाय के दूध का विरोध क्यों कर रहे हैं।

मुंबई के जुहु स्कीम विस्तार में रविवार - 2 दिसम्बर 2018को भारत का सबसे बड़ा विगन फुड फेस्टिवल आयोजित किया गया था, जिसमें खान-पान के 200 से अधिक स्टॉल लगाये गये थे। इन स्टॉलों में कई सारे स्टॉल विगन मीट के भी थे, जिसमें कृत्रिम मांसाहारी बानगी पेश की गई थी। मोक मीट के उन स्टॉलों पर विविध लज़ीज आईटम बेची जा रही थी। एक स्टॉल का तो नाम ही मीट काफे रखा गया था।

उस पर शाकाहारी लोगों को आकर्षित करने के लिए आकर्षक बड़े-बड़े बोर्ड लगाये गये थे। एक स्टॉल पर कृत्रिम चिकन में से बनाया विगन बर्गर बेचा जा रहा था, जो दिखने में एवं स्वाद में भी चिकन बर्गर जैसा ही था। जिंदगी में कभी भी मांसाहारी बानगी नहीं खाने वाले शाकाहारी लोगों ने भी वह विगन चिकन बर्गर मजे से खाया था। यदि शुद्ध शाकाहारी लोग भी विगन बनने की होड़ में आगे बढ़ेंगे (यानि सवाया शाकाहारी बनने की होड़ में सवार हो जायेंगे) तो इस प्रकार कृत्रिम मांस, कृत्रिम चिकन खाते-खाते कब असली मांस, असली चिकन खाने लगेंगे उसका पता उसे खुद को भी नहीं लगेगा। [मैं यहाँ पर संजय भाई का आभार अभिव्यक्त करते हुए उन्हीं के शब्दों को अनुवादित कर रहा हूँ।]

विगन का प्रचार-प्रसार विदेश में हुआ। शुरूआत भी वहीं पर हुई। विगन का मूल उद्देश्य डेयरी व्यवसाय में होने वाली हिंसा के सामने लोगों को जागृत करके उन्हें दूध-दही-घी-छाछ-पनीर-चीज़ इत्यादि पदार्थ छुड़वाने का था।

विगन के समर्थक डेयरी व्यवसाय में हो रही हिंसा का प्रचार कर लोगों को दूग्ध उत्पादों का त्याग करने की सलाह देते हैं, मगर उस त्याग से उत्पन्न होने वाली कुपोषण की समस्या से निपटने के लिए प्रयोगशाला में निर्मित सिन्थेटिक मांस खाने की हिदायत देते हैं, जिसे वह अहिंसक मांस कहकर पुकारते हैं (जो सरासर झूँठ है)। कुछ समय पूर्व हैदराबाद में आयोजित इन्टरनेशनल सेमीनार में सिन्थेटिक मीट की खोज करने का जोर-शोर से ढिंढोरा पीटा गया था।

उनके दावे कितने खोखले हैं, उसका इस बात से ही पता लग जाता है कि सिन्थेटिक (कृत्रिम) मांस प्राणी के शरीर के जीवंत कोषों से लेकर ही प्रयोगशाला में बनाया जाता है। उस मांस को खाने वाले, पशु के जीवंत कोशिकाओं के हत्यारे होने से उसे अहिंसक या शाकाहारी कतई नहीं मान सकते हैं। प्रयोगशाला में तैयार किया जाने वाला मांस अत्यंत महंगा होने से जुहु के विगन फूड़ फेस्टिवल में अन्न और दाल-दलहन

Scanned by CamScanner

से निर्मित और मांस जैसी दिखने वाली बानगी बेची गई थी। विगन के प्रचार के पीछे अन्नाहारी को मांसाहारी बनाने का पश्चिमी षड्यंत्र है। इस फेस्टिवल के आयोजन में 'पेटा' नामक संस्था ने भी सक्रिय सहयोग दिया था।

संपन्न लोगों में एक बड़ी भ्रान्ति है कि 'पेटा' नामक संस्था जीवदया प्रेमी है।

People For Ethical Treatment of Animals PETA

जल्लीकट्टु (दक्षिण भारत में प्रचलित बैल-सांडो की दौड़) के ऊपर (सुप्रिम कोर्ट से) लाये गये प्रतिबंध से भारत देश में मशहूर होने वाली पीपल फोर एथिकल ट्रीटमेन्ट ऑफ एनिमल्स (पेटा) नाम की संस्था अमरिका में अनेक विवादों में घिरी हुई है।

इस संस्था को अमरीकन नागरिक एवं मल्टीनेशनल कँपनीयों के द्वारा वार्षिक 4.5 करोड़ डॉलर (अंदाजन 300 करोड़ रूपयों) का सुविशाल चंदा मिलता है। इस फंड में से 20 प्रतिशत फंड का उपयोग पब्लिसिटि करके और अधिक फंड एकत्रित करने में होता है। पेटा के संस्थापक प्रमुख इन्ग्रीड न्युकिर्क का मासिक वेतनमान ही 25 लाख रूपया है। 'पेटा' अमरिका में कोई मल्टीनेशलन कंपनी जैसा नेटवर्क रखने वाली संस्था होने पर भी उसकी सारी प्रवृत्तियाँ भेद भरम से भरी है। फिर भी 'पेटा' की कतिपय जानकारी जो हमें उपलब्ध हुई है हम पाठकों के सामने रख रहे हैं।

☛ 'पेटा' संस्था का मुख्य उद्देश्य प्राणियों की संपूर्ण मुक्ति है। वे लोग मनुष्यों के द्वारा किये जा रहे प्राणियों के तमाम प्रकार के उपयोग के विरोधी हैं, जिसमें मांसाहार, दुग्धाहार, चीज़, अण्डे, मछली, चिकन, शहद, प्राणी संग्रहालय (Zoo) मछलीघर, सर्कस, ऊनी कपड़े, चमड़ा, फर, रेशम, शिकार एवं मच्छीमारी समाविष्ट है। यहाँ तक कि वे लोग घर में पालतु प्राणी रखने के भी विरोधी हैं। इस विरोध की विडंबना यह है कि बूचड़खाने से बचाये हुए या अनाथ प्राणियों को यदि 'पेटा' के कोई भी शेल्टर में रखा जाने पर 'पेटा' वाले किसी गोद लेने वालों को ढूँढने के बजाय, उन प्राणियों को मार डालना ज्यादा पसंद करते हैं।

☛ 'पेटा' संस्था दूध की भी विरोधी है। दूध का विरोध पुख्ता बनाने के लिए उन्होंने कुछ वैज्ञानिकों को साध कर ऐसा संशोधन करवाया था कि, 'दूध का आहार करने वाले 'ओटिझम' रोग के शिकार होते हैं। 'पेटा' संस्था के कार्यकर्ता स्कूल के बाहर दूध एवं मांसाहार के विरोध के पोस्टर लेकर खड़े रह जाते हैं, जिसमें लिखा होता है कि, 'आप को दूध पिलाने वाली आप की मम्मी गाय की हत्यारी है।'

☛ 'पेटा' संस्था बूचड़खाने में प्राणियों पर हो रही क्रूरता का विरोध करती है, लेकिन बिना क्रूरता किये गये कत्ल का समर्थन करती है। (या चुप रहती है।) इसीलिए दिल्ली के नजदीक आये गाज़ीपुर के कत्लखाने में बिना क्रूरता कत्ल हो, उसकी जिम्मेदारी 'पेटा' को सौंपी गई है।

☛ 'पेटा' संस्था कत्ल किये हुए प्राणी का मांस खाने का तो विरोध करती दिखती है, लेकिन यदि वह मांस प्रयोगशाला में तैयार किया गया हो तो उसे खाने में 'पेटा' के समर्थकों का पूर्ण समर्थन है।

अमरीका की एक कंपनी टिश्युकल्चर का उपयोग करके लेब में मांस का उत्पादन करने के बारे में संशोधन कर रही है। 'पेटा' उस कंपनी को राशि देकर महिने में 25,000 टन मांस की उत्पादक फैक्ट्री तैयार करवा रही है।

भारत में से औसतन वार्षिक 7000 करोड़ रूपयों का चमड़े का निर्यात होता है। चमड़ों के व्यवसाय के द्वारा भारत के अंदाजन 2 करोड़ लोगों को रोजी-रोटी मिल रही है। 'पेटा' ने

Scanned by CamScanner

अमरिका और यूरोप के सुपरस्टोरों में बिक रहे भारत के चमड़ों के उत्पाद के विरूद्ध मुहिम चलाई है। 'पेटा' का कहना है कि 'भारत के बूचड़खानों में प्राणियों पर क्रूरता की जाती है अत: भारत का चमड़ा खरीदना नहीं चाहिए।' इस मुहिम के कारण पूरी दुनियां में 3000 स्टोर्स चलाने वाली गेप नामक कंपनी ने भारत और चाईना में से निर्यात की गई चमड़े की चीजें लेनी-बेचनी बंद कर दी।

हकीकत यह है कि यूरोप-अमरीका में चमड़े का व्यापार करने वाली मल्टीनेशनल कंपनीयों को लाभ पहुँचाने के लिए यह मुहिम चलाई जा रही है।

☛ अमरिका में आये हुए सी-वर्ल्ड नाम के मछलीघर में व्हेल मछली का जीवंत प्रदर्शन रखा जाता था। 'पेटा' के द्वारा इल्जाम लगाया गया कि उस प्रदर्शन में मछली पर बहुत क्रूरता की जाती है। 'पेटा' ने कार्यक्रम के बहिष्कार की 'ऑनलाईन' मुहिम चलाई, जिसके कारण पेटा को भारी प्रसिद्धि मिली थी और दान में मिलने वाली राशि में 30 प्रतिशत का इजाफा हुआ था। आज भी सी-वर्ल्ड के कार्यक्रम चालु हैं और 'पेटा' का विरोध भी .....

☛ थोड़े समय पूर्व चाईना में डोग फेस्टिवल आयोजित किया गया था। जिसमें कुत्ते के मांस से बनी विविध आईटम खाने के लिए लोग इकट्ठे हुए थे। 'पेटा' के कार्यकर्त्ता वहाँ पर विरोध करने पहुँच गये थे।

'पेटा' की दलील यह थी कि, 'अमरिका के लोग कुत्ताप्रेमी हैं, इसलिए कुत्तों के मांस से बनी चीजें खानी नहीं चाहिए।'

अमरीका के लोग गाय का कत्ल करके खा जाते हैं। फिर भी आज तक 'पेटा' संस्थावालों ने कत्लखानों के बाहर कभी भी किसी का विरोध किया हो, ऐसी जानकारी नहीं है।

☛ 'पेटा' के द्वारा चमड़ा, मांस, फर, दूध इत्यादि का विरोध करने के लिए हॉलीवुड के कलाकारों की मदद ली जाती है, जिसके चलते 'पेटा' को सस्ती प्रसिद्धि भी मिल जाती है, लेकिन फिल्म स्टार्स कई बार खुद जिन चीजों का प्रचार करते दिखते हैं, उससे ठीक विपरीत बर्ताव भी करते है। जैसे कि, पमेला एन्डरसन चमड़े का विरोध करती है, लेकिन उसकी वेन में इन्टिरियर चमड़े का बना हुआ था। जेना जेमसन चमड़ा विरोधी मुहिम में हिस्सा लेने वाली एक हॉलीवुड स्टार है। थोड़े दिन के बाद वे खुद चमड़े के जेकेट में देखने को मिली थी। 'पेटा' के द्वारा फर विरोधी मुहिम में भाग लेने वाली अनेक अभिनेत्रियाँ बाद में फर के कोट में घूमती हुई दिखी थी।

[ठीक वैसे ही 'विगन' के प्रचारक के रूप में (थोड़े साल पूर्व दिख रहे) आमिरखान 'दंगल' पिक्चर में मांस खाते एवं खिलाते दिखे थे। थोड़े महिने पहले 'विगन' बन गये विराट कोहली अभी भी मांस खाने वालों में शुमार है। ऐसे तो कई सारे सेलिब्रीटीज़ 'विगन' के षड्यंत्रकारी लोगों के द्वारा हायर किये जाते हैं, जो जनता को छलने के लिए मांसाहार-दुग्धाहार त्यागी बन जाते हैं लेकिन कोई भी अतिलोकप्रिय फिल्म स्टार-क्रिकेटर के घर कौन देखने जा सकता है कि वह जो कह रहा है वो कर भी रहा है या नहीं? पैसे लेकर किसी का भी विज्ञापन कर देने वालों पर भरोसा करना मुश्किल है।]

☛ 'पेटा' संस्था के द्वारा अमरीका के वर्जिनीया प्रांत में चल रही प्राणियों की बेलगाम कत्ल की खबर अमरीका मीडिया में प्रकाशित होते ही जीवदया प्रेमियों में भूचाल आ गया था।

वर्जिनीया में 'पेटा' के द्वारा एक एनीमल शेल्टर चलाया जाता है। कुत्ते-बिल्ली इत्यादि पालतू जीवों को जब कोई भी संभालने वाला ना हो, तब उन्हें इस शेल्टर में लोग रख जाते थे। 'पेटा' संस्था की जिम्मेदारी इन प्राणियों को गोद लेने वाले को ढूँढ उसकी जान बचाने की थी। बजाय उसके 'पेटा' के कार्यकर्त्ता इन प्राणियों को बेहोश करके कत्ल करते हुए दिखे थे। सन् 2014 में 'पेटा' के शेल्टर में जो 2631 प्राणी रखे गये थे, उसमें से

Scanned by CamScanner

2324 का कत्ल कर दिया गया था। सन् 2015 में जो 1974 प्राणियों को शेल्टर में रखा गया, उसमें से 1456का कत्ल कर दिया गया। सन् 1998से 'पेटा' ने 34970 प्राणियों का कत्ल कर डाला।

☛ विदेश में जन्म लेकर भारत में जीवदया का प्रचार करने आई 'पेटा' संस्था की क्रूरता की व्याख्या भी कुछ विचित्र किस्म की है। दिल्ली के ईदगाह एरिया में परापूर्व से बूचड़खाना चल रहा था, जिसमें हजारों जीवों का बेरहमी से कत्ल किया जाता था। 'पेटा' और अन्य कुछ संस्था के द्वारा इस बूचड़खाने को बंद कराने के लिए सर्वोच्च न्यायालय में याचिका दायर की गई थी। सर्वोच्च न्यायालय ने बूचड़खाने को बंद करने की बजाय इसे दिल्ली से बाहर आये गाज़ीपुर में शिफ्ट करने का आदेश दिया था। ईदगाह से भी गाज़ीपुर के कत्लखाने की क्षमता 10 गुना ज्यादा हो गई, क्योंकि वह मशीन से चल रहा था (मगर 'पेटा' को संतोष था) 'पेटा' की मांग सिर्फ इतनी ही थी कि गाज़ीपुर में जितने भी प्राणी काटे जायें वे इन्सानियत से काटे जायें। 'पेटा' को कत्ल के खिलाफ शिकायत नहीं थी, क्रूरता के खिलाफ थी। 'पेटा' की माँग थी कि 'पशु को मारने से पूर्व बेहोश किया जाये, एक पशु का कत्ल दूसरे पशु के सामने ना हो', ऐसी-ऐसी माँगे सुप्रिम कोर्ट ने स्वीकार करके 'पेटा' को इसका अमल कराने की जिम्मेदारी सौंपी थी। 'पेटा' ने भी रोज के हजार पशु का कत्ल करने वाले बूचड़खाने की मोनीटरींग की जिम्मेदारी सहर्ष स्वीकार कर ली थी।

श्री संजय वोरा जी से प्राप्त इन सारी बातों से पता चलता है कि धंधादारी संस्थाए 'विगन' प्रचार में इतना रस क्यों ले रही है?

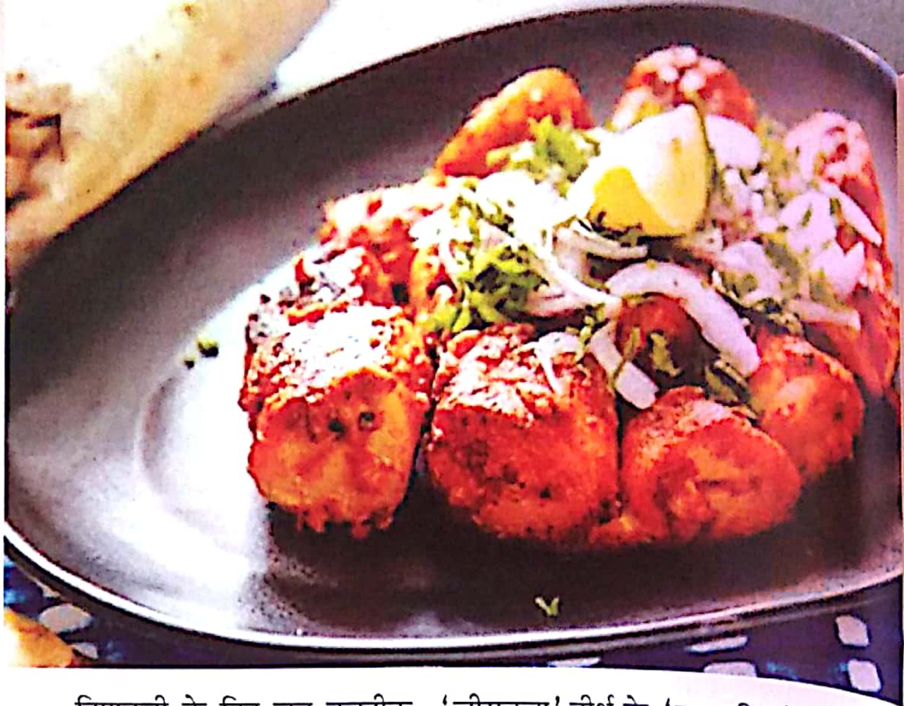

दिपावली के दिन जब नजदीक होते हैं तभी अखबारों में दूध की मिठाईयों में मिलावट की खबरें आने लगती है। फूड इन्स्पेक्टरों के द्वारा छापे मारे जाते हैं, (या मरवाये जाते हैं)। और उसी वक्त चॉकलेट, केड़बरी का भी धूमधाम से प्रचार-प्रसार विज्ञापनों के जरिये देखने को मिलता है। तब समझ में आना चाहिए कि मिठाईवालों के धंधे तोड़ कर, चॉकलेट वाले अपनी गोटी बिठाना चाहते हैं।

ठीक इसी प्रकार 'विगन' प्रचारक लोग, 'विगन' उत्पादों के बाजार को हवा देने, दूध-घी इत्यादि के विरोध में लगे हुए हो तो कोई नई बात नहीं है।

प्रश्न नं. 3 अन्य प्राणियों की तरह गाय भी बछड़े को जन्म देने के बाद दूध देती है और वे दूध उनके बछड़े के लिए होता है। पृथ्वी पर सिर्फ मनुष्य जाति ही ऐसी है जो अन्य जाति के दूध पर जीवन बिताती है।

उत्तर: दूध बच्चे के लिए होता है, यह बात सही है, लेकिन दूध सिर्फ बच्चे के लिए ही होता है यह बात झूँठी है। आप जान कर आश्चर्य करेंगे कि 'महावीरजी' तीर्थ के महावीर स्वामी, 'जीरावला' तीर्थ के, 'फलवृद्धि-मेड़ता' तीर्थ के, 'किशनगढ़-चिंतामणि' तीर्थ के पार्श्वनाथजी और ऐसे अनेक तीर्थों के परमात्मा जमीन के नीचे गढ़े हुए थे तब गाय के दूध से उनका सहज रूप से प्रक्षाल हो जाने पर ग्वाले की खोजबीन पर प्रभु मिले हैं। गाय अपने थन में से दूध वहाँ (प्रभुजी के स्थान) पर निकाल देती थी इसलिए ग्वाले को मिलता नहीं था।

इस बात से फलित होता है कि गाय का दूध भगवान के लिए भी होता है और इन्सान के लिए भी।

आप कहेंगे कि यह तो सरासर अन्याय है। बछड़े को दूध ना मिले और दूसरे पी जाए। बछड़े को भी दूध पिलाया ही जाता है लेकिन बछड़े को ज्यादा दूध पीने देने पर बछड़े की मौत हुई हो ऐसे किस्से भी बने हैं और गाय का दूध ना निकालने पर गाय को स्वास्थ्य हानि का नुकसान झेलना पड़ा हो ऐसे किस्से भी बने हैं, इसीलिए बछड़े को दूध पीने के बाद, बचा हुआ शेष दूध इन्सान अपने काम में लेता हो तो उसमें पाप कहाँ है?

कुदरत के कुछ तत्त्व ऐसे हैं कि जो अन्यार्थ जीते हैं। सिर्फ अपना स्वार्थ ना

Scanned by CamScanner

देखते हुए, अन्यों के लिए भी परोपकारी बनते हैं।

परोपकाराय वहन्ति नद्यः,
परोपकाराय दुहन्ति गावः।
परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः,
परोपकाराय सतां विभूतयः।।

नदीयाँ परोपकार के लिए बहती हैं। वृक्ष परोपकार के लिए फलते हैं। फूल के पौधे परोपकार के लिए फूल देते हैं। गाय परोपकार के लिए दूध देती हैं।

सज्जनों की संपत्ति परोपकार के लिए होती है। कई सारी माँ ऐसी है जो सिर्फ अपने बेटों के लिए ही दूध नहीं देती है अपितु दूसरों के बच्चों के लिए भी दूध देती है।

जलगाँव गौशाला में (रतनलाल जी बाफना की गौशाला में) वर्षों पूर्व एक मदर टेरेसा नाम की गाय थी, जो सभी बछड़ों को अपना दूध पिलाती थी।

अमरीका में आज भी मदर मिल्क बेचा जाता है। एक अभिनेत्री ने मरी हुई कुत्ती के पिल्ले को अपना दूध पिलाया था, तब वह ब्रेकिंग न्यूज बनकर कई जगह फैल गया था।

सिर्फ मनुष्य जाति ही ऐसी है जो जानवर को पालती भी है और उसका समुचित सदुपयोग भी करती है।

अन्य जाति के दूध पर जीवन बिताने पर पाप क्या है?

सिर्फ मनुष्य जाति ही ऐसी बुद्धिशाली जाति है जो मांस खाने के पाप से बचने के लिए दूध पीकर, दूध का दान अन्यों को देकर पुण्य की भी कमाई करना जानती है। (वह बात हम पहले से ही बता चुके हैं कि दूध और अन्न से जीने वालों को जीवन भर मांस खाने के दिन नहीं आते हैं लेकिन मांस खाने वाले भी बिना दूध नहीं जीते है क्योंकि सभी ने अपनी माँ का दूध तो एक न एक दिन पीया ही था।)

गाय कभी जंगल में देखी है? वह इन्सानों के बीच में ही जन्म लेती है, जिंदा रहती है। गाय को घास खिलाने से वह ज्यादा दूध देती है। बछड़े की आवश्यकता से भी कई गुणा अधिक दूध वो मालिक के लिए देती है। अन्य जरूरतों के लिए भी देती है। गिर की गाय के लिए ऐसा कहा जाता है कि वह मालिक को हुए रोग को पकड़कर जंगल में से, चारागाह मैदान में से वो ही चारा चरती है जिससे मालिक का रोग मिट जाये।

औषधीय गुणों वाला दूध पीने के बाद रोग नहीं होता है। हुआ रोग मिट जाता है तो दवाई खाने की नौबत ही नहीं आती है।

इन्सान ने की हुई रक्षा-सेवा का बदला गाय दूध देकर चुका देती है। एक्स्ट्रा दूध पैदा कर के वह मालिक के प्रति प्यार जताती है।

प्रश्न नं. 4 ज्यादा दूध लेने के चक्कर में गायों को गर्भवती बनाया जाता है, इसलिए गाय का दूध पीना पाप है?

उत्तर : गाय की बात उठाकर शोरगुल मचाने वाले यह बात भूल रहे हैं कि कृत्रिम गर्भवती बनाना एवं दूध ना आता हो तो दूध बढ़ाने के लिए इंजेक्शन-दवाई देना मनुष्य महिलाओं के बारे में भी समान है।

आई.वी.एफ. ट्रीटमेन्ट के कितने सारे विज्ञापनों से अखबार भरे पडे हैं, वहाँ पर विरोध ना करने वाले, यहाँ पर क्यों कर रहे हैं?

प्रश्न नं. 5 80 प्रतिशत बछडों का कत्ल कर दिया जाता है। बीफ इण्डस्ट्रीज वालों को बछड़े बेच दिये जाते हैं, इसलिए दूध पीना पाप है।

उत्तर : इस प्रश्न का वैसे तो उत्तर प्रथम उत्तर में ही समाविष्ट है फिर भी बता देते हैं। जो बछड़े कत्ल के लिए बेचे जाते हैं वे अधिकांश मेल (पुरूष) बछड़े है। वह भी षड़यंत्रकारियों की सफलता के कारण ही कटने के लिए भेजे जा रहे हैं।

बैल निकम्मे होने के कारण ही पुरूष बछड़े मर रहे हैं, अभी गाय का उपयोग दूध इत्यादि में हो रहा है, इसीलिए फिमेल (स्त्री) बछड़ी जीवित रह जाती है। गाय-भैंस इसी हेतु से 15/20 साल तक जीवन जीती है। इस तथ्य को ध्यान में रखकर उल्टा 'विगन' वाले लोगों को दूध का प्रचार करना चाहिए।

आज का जमाना स्वार्थी होता जा रहा है। घर में माँ-बाप भी निकम्मे लगने पर आज के कलयुगी बेटे उन्हें वृद्धाश्रम में छोड़ आते हैं तो बछड़ों की तो बात ही कौन सोचें? लेकिन बूचड़खाने में कटते बछड़े के ऊपर यदि सचमुच दया हो तो बैलों की उपयोगिता सिद्ध करनी चाहिए, उसके बजाय 'विगन' के पागल प्रचारक लोग गायों को निरूपयोगी बनाने पर तुले हैं, ताकि गायों का नंबर भी उसी बूचड़खाने में लग जाये, जिसमें आज बछड़े कट रहे हैं। धन्य है, इन बुद्धिशाली बुद्धुओं को!!!

प्रश्न नं. 6 बछड़ों को जन्म के तुरंत बाद गाय से अलग कर दिया जाता है, ताकि अधिक से अधिक दूध पाया जा सके, इसलिए दूध पीना पाप है ना?

उत्तर : आज के जमाने में भी जो बैल या सांड दिख रहे हैं उसका अर्थ क्या? सभी किसान-पशुपालक ऐसा अत्याचार नहीं करते है।

यदि कोई करता भी हो तो भी उसका पाप उस बछड़े को अलग करने

Scanned by CamScanner

वाले को और भूखा मारने वाले को लगता है, ना कि दूध पीनेवाले को। दूध पीनेवाले को लगता भी हो तो भी बहुत ही न्यून ..... अज्ञानताजनित लगता है। क्रूरताजन्य नहीं लगता है। आज चाईना द्वारा निर्मित उत्पाद पूरे विश्व में चल रहे हैं। चाईना अपने कार्मिकों पर अत्याचार (न्यून वेतन-अधिक कार्य करवाना) करके अपने उत्पाद सस्ते दाम में बेच रहा है। पूरी दुनियाँ सस्ते दाम के चलते वह खरीदती है मगर खरीदने वाले चाईना द्वारा किए जा रहे अत्याचार के समर्थन में नहीं है इसलिए उन्हें उसका दोष नहीं लगता है, क्योंकि परंपरा से (इनडायरेक्टली) होने वाली हिंसा का दोष न्यून होता है, ना के बराबर।

यदि परंपरा से आगत (इनडायरेक्ट) हिंसा के दोषों को भी साक्षात्-अनंतर (डायरेक्ट) हिंसा के तुल्य मानेंगे तो अनाज-फसल उगाने में भी पंचेन्द्रिय हिंसा के पाप लगने लगेंगे मगर लगते नहीं है, क्योंकि आज कल किसान जो खेती कर रहे हैं उसमें चूहे, मेंढक, साँप इत्यादि भी मरते हैं मगर उनके मौत या हत्या के दोष गेहूँ-चावल खाने वाले आम आदमी को नहीं लगता है। गेहूँ-चावल खाने वाले को सिर्फ गेहूँ-चावल इत्यादि खाने से लगने वाली एकन्द्रिय हिंसा का ही दोष लगता है।

हाँ, दुनियाँ में रहने वाले हर संसारी जीव को आंशिक अनुमोदना का पाप तो सर्वत्र लगता ही है। वो चाहे पंचेन्द्रिय की हत्या करता हो या ना करता हो। परंपरा से (इनडायरेक्टली) वह सबसे जुड़ा हुआ है, इसलिए .....

ज्यादा दूध पाने के प्रयास करने पर दूध त्यागने की बात 'विगन' वाले कर रहे हैं तो 'विगन' वाले क्या ज्यादा अन्न पाने की कोशिश करने वाले किसान का अन्न खाना भी छोड़ देंगे? पागलों के गाँव अलग नहीं बसते हैं, वो सयाने लोगों के बीच ही रहते हैं।

प्रश्न नं. 7 गाय दूध कम देने लगती है तो उसे बूचड़खाने भेज दिया जाता है, इसलिए दूध नहीं पीना चाहिए?

उत्तर: इसलिए उल्टा दूध ज्यादा पीना चाहिए, ताकि गाय के दूध की डिमान्ड बढ़ने पर कम दूध देने वाली गाय को भी जीवित रखने का मन हो जाये। डिमान्ड बढ़ती है तो दाम बढ़ते हैं उसके।

जिसके दाम बढ़ते हैं, उसे इन्सान सुरक्षा देता है, सुविधा देता है। गाय के भी दाम बढ़ेंगे, लोग उसकी सुरक्षा करेंगे, उसकी अपने प्राणों से भी अधिक रक्षा करेंगे।

हकीकत में तो गायों का असली मूल्य दूध से नहीं, गोबर एवं गौमूत्र से है। शास्त्रों में गोबर को श्री यानी लक्ष्मी देवी का निवास स्थान – उत्पत्ति स्थान बताया है। यदि गोबर के सही उपयोग की जानकारी मिले तो गायों की आज जो अवदशा देखने को मिल रही है, वह कभी भी देखने को ना मिले।

नो डॉऊट (इसमें कोई शक नहीं) शहर में रोजगार के अवसर ज्यादा हैं। शहर में समृद्धि एवं सम्पन्नता ज्यादा है। शहर में अधिक कमाई करने वाले मिलते हैं। गाँवों में यह सारी चीजें कम देखने को मिलती होगी मगर यह बात भी उतनी ही सच्ची है कि शहर के अस्पताल हाऊसफुल है और गाँवों में अस्पताल देखने तक नहीं मिलते। साथ में गाँवों को अस्पताल की जरूरत भी कम ही है क्योंकि वहाँ के लोगों का स्वास्थ्य असली दूध-घी इत्यादि के उपयोग से अच्छा रहता है। गाँव वाले कम कमाते होंगे मगर कंडे (गोबर) इत्यादि के उपयोग से उन लोगों का खर्चा भी कम आता है। ना गैस की पराधीनता, ना पेट्रोल-डीज़ल का ज्यादा खर्चा/गोबर में से सी.एन.जी. का उत्पादन इत्यादि से अब गाँव के लोग भी समृद्धि की ओर अपने कदम आगे बढ़ा रहे हैं। इस बारे में जिसे ज्यादा जानकारी चाहिए वे विनियोग परिवार से संपर्क करें।

प्रश्न नं. 8 विदेशों में बहुत सारी डेयरी के नजदीक बड़े-बड़े बूचड़खाने होते हैं।

उत्तर: दूध पीने वालों को यदि गाय के कत्ल का दोष लगेगा तो अन्न खाने वालों को कितने पंचेन्द्रियों के कत्ल का पाप लगेगा? दूध पीने का बंद करने के बाद तो डेयरी के स्थान पर ही बूचड़खाना आ जायेगा। हकीकत में बूचड़खाने में कटने वाली गायों का दोष काटने वालों को है, दूध पीने वाले या दूध छोड़ने वाले पर नहीं है, यह सीधी सी बात भी टेढ़े दिमागवालों के भेजे में नहीं उतरती है। गाय काटने या कटने का पाप गाय का माँस खाने वाले लोगों को लगता है, दूध पीने वालों को नहीं। यदि बूचड़खाने बाजू में होने मात्र से ऐसे दोष लगने लगेंगे तो पडोसी के मांसाहार का दोष अहिंसक जैन को भी लगने लगेगा। स्कूल में मांसाहारी बच्चे के बाजू में बैठने वाले शाकाहारी बच्चे को मांसभक्षण का दोष लगने लगेगा। फिर से कह रहा हूँ, इनडायरेक्ट रहे लोगों को ऐसे पाप लगने की बात को कोई भी शास्त्र समर्थन नहीं देता है। परमात्मा के जन्म महोत्सव मनाने वाले देवों को परमात्मा के मात-पिता के अब्रह्म की अनुमोदना का

Scanned by CamScanner

पाप नहीं लगता हैं। किसी दीक्षार्थी की दीक्षा का कार्यक्रम करने वालों को दीक्षार्थी ने भूतकाल में जो पाप किये हो उसका दोष नहीं लगता है या दीक्षार्थी भविष्यकाल में दीक्षा लेकर कोई पाप करें उसका भी दोष नहीं लगता है तो आज गाय का दूध पीने वाले को भविष्य में कटने वाली गाय को काटने का दोष कैसे लगेगा? समझ से परे हैं।

यदि ऐसा दोष मानने लगेंगे तो साँस लेना भी मुश्किल हो जायेगा।

प्रश्न नं.9 गाय के गोबर से मीथेन गैस पैदा होने से पर्यावरण दूषित होता है। पशु के मल-मूत्र से अमोनिया, नाइट्रसऑक्साईड, हाईड्रोजन सल्फाईड पैदा होने से पर्यावरण प्रदूषित होता है। नासा के मुताबिक मीथेन का एक अणु कार्बनडाइऑक्साईड से 100 गुणा ज्यादा गर्मी पैदा करता है। भारत के पशुकर्मी में करोड़ों की संख्या में पशु है और उससे पर्यावरण खत्म हो रहा है। इसलिए ..... (यानि प्रश्नकर्ता के मुताबिक पेट्रोल-डीजल के, गाड़ी-ट्रक के, उपयोग से भी खतरनाक गाय-बैल के मल-मूत्र है, जो पूरी दुनियाँ में ग्लोवल वार्मिंग का एवं जलवायुपरिवर्तन का कारण है।)

उत्तर: धन्य है इन बुद्धि जीवियों की बूढ़ी हो चुकी बुद्धि को। पशुकृषि के नाम से शोरगुल (हंगामा खड़ा) करके इन लोगों को पशु एवं कृषि को ही समाप्त कर देना है। गायों के गोबर से कई गुणा ज्यादा मीथेन गैस तो मनुष्य के मल-मूत्र से पैदा हो रहा है, तो क्या मनुष्य को खत्म कर देना चाहिए?

मनुष्य को मीथेन गैस निकालने के लिए बड़े-बड़े मकानों में ऊपरी मंजिल (टेरेस) पर पाईपलाईन निकालनी पड़ रही है। पशु जितना खाता है, उससे 100 गुणा ज्यादा तो प्रकृति को देता है।

आप आश्चर्य करेंगे कि यू.पी.ए. गवर्मेन्ट के वक्त सरकार ने ऑस्ट्रेलिया से गोवर का शिपमेंट इम्पोर्ट (आयात) करवाया था और वो ही सरकार ने पिंक रिव्योलूशन के नाम से मीट लॉबी को खुश करने के लिए पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत हजारों नये बूचड़खाने खोलने का एलान किया था।

पशु के गोवर से बने खाद से आज अधिकांश जगह पर खेती हो रही है। जहाँ फर्टीलाईज़र का उपयोग हो रहा है, वहीं पर केमिकल वेस्ड एवं गोवर आधारित खाद भी उपयोग हो रही हैं।

फिर तो ऐसे खाद से उत्पन्न होने वाला अन्न भी विगन प्रचारक कैसे खा सकते हैं? क्योंकि ऐसा अन्न खाने पर भी उन लोगों को गाय की हत्या का पाप उनके मत के मुताविक लगना पक्का हो जाएगा।

बेचारे विगन समर्थक लोगों को तो फिर अन्न-जल का आजीवन त्याग ही करना पड़ेगा।

हकीकत में विगन की वात करने वाले, उनके प्रचारक एवं समर्थक कुछ समाज के लोग हैं जो अधिक माँस पाने के लिए एवं शाकाहारी को भी माँसाहारी बनाने के लिए, देश की पशु एवं कृषि आधारित अर्थव्यवस्था को तहस-नहस करने के लिए ही ऐसे हथकंडे अपना रहे हैं। दूध बंद करवाने से एवं दूध से बने उत्पाद का मार्केट खत्म करने के बाद ही माँस की दुकान जम सकती है। यह बात 100 प्रतिशत सही है, इसीलिए भोपाल इत्यादि शहरों में कुछ समाज के इलाकों में एवं उनकी बस्ती में ही विगन समर्थक देखने को मिलते हैं।

हिंसा का विरोध करने वाले वो लोगों के पास इस तर्क का कोई भी जवाव नहीं है कि फसल उगाने में होने वाली हिंसा का सोल्युशन क्या है? ऑर्गेनिक पद्धति से उगाने पर भी फसल हिंसक ही मानी जाएगी, क्योंकि उसमें भी छोटे-मोटे जीवों की बहुत ज्यादा उत्पत्ति होती है और नाश भी करना पड़ता ही है।

पर्यावरण को नुकसान के नाम पर पशु को ही खत्म करने का षडयंत्र करने वाले कभी सफल नहीं हो पाएँगे, क्योंकि आज भारत राष्ट्र भी जाग चुका है।

भारत की गाय पाकर ब्राजिल-वियतनाम-ऑस्ट्रेलिया-अमरीका जैसे देश मजबूती से आर्थिक-शारीरिक-वैश्विक रूप से समृद्ध एवं सम्पन्न हो रहे हैं, तब भारत क्यों पीछे रहेगा?

उ.प्र. में बसे, अमरीका से आये शरद गंगवार को जाकर कोई मिले। दिल्ली से एम.बी.ए. होने के वाद सन् 2009 में न्यूयॉर्क में अमरिकन एक्सप्रेस में अच्छी नौकरी पाई।

सन् 2014 में अच्छी सैलरी वाली नौकरी छोड़ के उ.प्र. में आकर गायों से स्टार्टअप किया। 2 गायों से शुरू करने वाले शरद आज पूरे जिले के सर्वाधिक दुग्ध उत्पादक बन गये हैं और 80 गायों के मालिक शरद के पास प्रेरणा लेने दूर-दूर से लोग आ रहे हैं।

मुझे एक सुश्रावक मिले थे, जिन का नाम डायाभाई है। अहमदाबाद जैसे शहर में रहने वाले इन श्रावक को गौशाला का वर्षों पुराना अनुभव है। उन्होंने मुझे अपना एक अनुभव बताया था कि, जब 600 रूपये तोला (10 ग्राम) सोना आता था, तब 600 रूपये में एक गाय आती थी।

Scanned by CamScanner

आज 30/35000 रूपये तोला सोना है और 30/35000 रूपये की एक गाय।

सोना और गाय दोनों की कीमत समान रूप से बढ़ी है। कोई अंतर दोनों के मूल्य में भी नहीं है, फिर भी किसी ने सोने में इनवेस्ट किया तो 5 किलो सोना, 5 किलो ही रहेगा। 35 सालों में सोना बढ़ेगा नहीं लेकिन 35 वर्षों में 5 गायों की 400/500 गाय हो जाना सहज है।

आज देश भले ही सीमेन्ट-काँक्रीट के बढ़ते जंगलों को ही विकास मान रहा है, लेकिन आने वाले भविष्य में देश को अपनी पुरानी सोच पर पुन: लौटना पड़ेगा, यदि समृद्धि के सपने को साकार करना हो तो।

आजादी (1947) के वक्त-देश की आबादी 30 करोड़ की और गायों की संख्या 90 करोड़ की थी।

आज-2019 में तकरीबन 130 करोड़ की आबादी मगर गायों की संख्या 10 से 15 करोड़ मात्र ....।

जो शेष बची हुई है, उन्हें भी समाप्त करने के लिए 'विगन' वाले प्रतिबद्ध हैं, इसीलिए तो ऐसे प्रलाप कर रहे हैं कि, 'गोबर में से मीथेन पैदा होता है। इसलिए गाय का अस्तित्व ही खत्म कर दो।'

प्रश्न नं.10 मानवीय जीवन के लिए दूध आवश्यक नहीं है। यदि होता तो कुदरत क्यों माँ का दूध बच्चे की 2/3 साल की उम्र होने पर बंद कर देती है?

उत्तर: किसने कहा कि मानवीय जीवन के लिए दूध आवश्यक नहीं है? विटामीन बी-12 का सोर्स क्या है?

Vitamin B-12 is Naturally Found in Animal Product, Including Fish, Meat, Poultry, Eggs, Milk and Milk Product (विटामीन-B 12 प्राकृतिक रूप से प्राणीज पदार्थ एवं दूध से ही प्राप्त होता है) Vitamin B-12 is generally not present in plant foods.... (विटामीन-बी 12 सामान्यतौर पर पेड़-पौधों में नहीं मिलता है)

चित्र स्पष्ट है कि यदि आप दूध पीना बंद कर देते हो, तो मजबूरन आपको मांस-मछली और अण्डे खाने पड़ेंगे। और ..... वह आप खाना शुरू कर दो इसीलिए विगन प्रचारक कमर कसके दूध को बंद करवाने हेतु जोर-शोर से चिल्ला रहे हैं। उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे' की तरह, विगन समर्थक तो एक कदम और आगे बढ़कर ऐसा कुतर्क जाल बिछाते हैं कि डेयरी की चीजें खाने से कॉलेस्ट्रोल, चर्बी एवं प्रोस्टेट कैंसर होता है।

जो दूध रोगप्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में सहायकर्ता है, उसे ही रोगवर्धक घोषित कर देना सरासर झूँठ ही है। हजारों में एकाध को दूध पीने पर स्वास्थ्य बिगड़ता हो तो वह अपवाद माना जाता है। वैसे तो जहर पीने से भी कोई बच जाता है मगर बचे हुए को देखकर जहर नहीं पीया जाता है। 'विगन' वाले दूध बंद करने की प्रेरणा देने के साथ-साथ सोयावीन से बना दूध-दही-छाछ लेने की भरपूर प्रेरणा देते हुए दिखते हैं। ये लोग तो दूध से भी ज्यादा ताकतवर सोयादूध को बताते हैं।

मैं उन लोगों की सोयावीन पॉलिसी का भी पर्दाफाश करना चाहूँगा।

जो खुद को विगन मानते हैं वे

Scanned by CamScanner

डेयरी उत्पादों का उपयोग नहीं करते हैं। गाय या भैंस के दूध के बजाय, वे सोयाबीन के दूध का उपयोग करते हैं। कुछ वैज्ञानिकों के द्वारा यह संशोधन किया गया था कि सोयाबीन महिलाओं में स्तन कैंसर के प्रसार को कम कर देता हैं, लेकिन न्यूयॉर्क के मेमोरियल स्लोन केट्टरिंग कैंसर सेन्टर के वैज्ञानिकों का कहना है कि सोयाबीन आहार लेने से कैंसर का खतरा बढ़ जाता है। सोयाबीन में कुछ रसायन ऐसे हैं, जो प्रोटीन को पचाने वाले एंजाइमों की गतिविधि को रोकते हैं। ये रसायन भी एक तरह के प्रोटीन होते हैं, जो खाना पकाने के बाद भी नहीं टूटते हैं, जिसकी वजह से प्रोटीन का पाचन कमजोर होता है। पेट खराब हो जाता है और शरीर में एमिनो एसिड अवशोषित होने में बाधा उत्पन्न होती है। कुछ प्राणियों पर सोयाबीनयुक्त भोजन देने का जब प्रयोग किया गया था, उनके लीवर में सूजन आ गई थी और कैंसर कोशिकाओं की उपस्थिति भी देखी गई थी।

न्यूयॉर्क मेमोरियल स्लोन केट्टरिंग कैंसर सेंटर में वैज्ञानिकों के द्वारा दो महिला समूहों पर प्रयोग किया गया। एक समूह को सोयाबीन युक्त एवं दूसरे को सोयाबीन मुक्त आहार दिया गया। उन्होंने देखा कि सोया से बना आहार लेने वाली महिलाओं में कैंसर की वृद्धि करने वाले जीन्स अधिक सक्रिय हो गए थे।

अतीत में अमरीकी वैज्ञानिकों ने संशोधन किया था कि सोयाबीन से स्तन कैंसर में लाभ होता है, और इस वजह से, लाखों अमरीकी स्वास्थ्य भोजन के रूप में सोयाबीन लेने लगे। वर्ष 1996में शोधकर्ताओं ने खुलासा किया कि सोयाबीन लेने वाली महिलाओं में स्तन कैंसर बढ़ता है। कायला टी. डैनियल नामक लेखक ने किताब लिखकर सोयाबीन के खतरों के बारे में चेतावनी दी थी। जिन महिलाओं ने प्रतिदिन 51 ग्राम सोयामिल्क इस्तेमाल किया था उनके स्तन कैंसर के खतरे में बढ़ोतरी हुई थी। जो विगन लोग गाय या भैंस के दूध का उपयोग नहीं करते हुए एक दिन में चार कप जितना सोयामिल्क लेते हैं, उनका कैंसर का खतरा बढ़ता है।

सोयाबीन की फसल उगाने वाले किसान को पूछो तो पता चलेगा, कि सोया में गाय के लिए चारा भी नहीं मिलता है, जिस प्रकार ज्वार-गेहूँ इत्यादि में मिलता है।

दूसरे नंबर में, सोया की फसल से जो थोड़ा बहुत भी चारा मिलता है वह गाय इत्यादि पशु को खिलाने पर दूध भी कम देते है। ज्वार-गेहूँ इत्यादि का चारा खिलाने पर दूध ज्यादा देते हैं।

सोयाबीन से निर्मित दूध बहुत ही अल्प मात्रा में एवं महंगा मिलता है। गरीबों को वह दूध बिल्कुल भी परवड़ता नहीं है। अमेरिका में सोयाबीन के दूध निर्माण हेतु फेक्ट्री खड़ी करने की मुहिम चल रही है, लेकिन धरातल पर अभी भी कुछ नहीं हुआ है।

विटामिन बी-12 का प्रश्न तो खड़ा ही रहेगा, दूध विरोधी प्रचार सुनकर दूध छोड़ने वाले को मांस खाने की मानसिकता ना हो तो वो ही कहावत याद आयेगी, 'धोबी का कुत्ता, न घर का न घाट का।'

रही बात आरोग्य की .....

आज के जमाने में मांसाहार अनेक रोगों का कारण है, वह अनेक बार सिद्ध हो चुका है। शक्ति वो ही अर्जित करनी चाहिए जो स्वास्थ्य को बिगाड़ ना दे। शक्ति अर्जित करने के लिए दूध और माँस दोनों लेने वाले मिलते हैं, तब स्वास्थ्य किसमें सलामत रहेगा?

एक मात्र शेष विकल्प दूध उत्पाद ही बचेगा।

माँ का दूध 2 साल तक ही जरूरी होता है, बाकी के वर्षों में गाय इत्यादि का दूध मिलता ही है इसलिए माँ को दूध नहीं आता है। कुदरत पर ही सब छोड़ना भी उचित नहीं है। जहाँ कुदरत के द्वारा पानी नहीं बरसाया जाता, वहाँ के प्रदेश के लोगों को क्या प्यासा मर जाना चाहिए या अन्य स्थान से पानी मँगवाकर भी जिंदा रहना चाहिए?

जिस बच्चे की माँ मृत्यु पा चुकी है, क्या कुदरत के भरोसे रहकर उस बच्चे को भी बिना दूध पिये या गाय के दूध पिये बिना मर जाना चाहिए? कैसी हास्यास्पद बातें है विगन समर्थकों की.....

उन लोगों की ओर से एक प्रश्न ऐसा भी आया था कि दूध मिलावटी आता है, इसलिए छोड़ देना चाहिए।

मैं उन लोगों को ही पूछता हूँ कि, अन्न भी मिलावटी आने लगा है, तो क्या सब कुछ खाना ही छोड़ देंगे?

अनशन-उपवास पर ही बैठ जायेंगे? या शुद्ध की खोज करेंगे?

उन लोगों को तो गाय-भैंस चारा खाते हैं, उसमें भी पेट दर्द होता है। खाये कोई, खिलाये कोई और दस्त किसी और को ही लग जाये, ऐसी स्थिति है उन लोगों की।

यह धरती माता इतनी समर्थ है कि आज जो आबादी है, इससे 10 गुणा ज्यादा आबादी का भी पेट भर सकती है। लेकिन दुष्टों और स्वार्थी लोगों के कारण धरती माँ बहुत ही दु:खी है। पशु को जिंदा रखने में जो घास-चारा जाता है, उस पर आपत्ति जताने का अर्थ है कि सभी पशु को मार डालना चाहिए। जो मांसाहारी

Scanned by CamScanner

लोगों ने अपने भोजन के लिए पशु पैदा किये हैं, वे तो मरेंगे लेकिन जो पशु सहज रूप से इस धरती पर पैदा हुए हैं, उसे मार डालने का विचार कितना क्रूर....।

पानी की किल्लत का प्रश्न भी अनुचित है, क्योंकि ऐसे प्रश्न पर तो कल मनुष्य के अस्तित्व को मिटाने की बात भी आ जाएगी।

दूध के कारण गटर का पानी बढ़ता है, यह बात सरासर गलत है। इन्सानों के कारण ही पूरी दुनियाँ में गटर खड़ी हुई है। इस दुनियाँ में जितनी गंदगी इंसान करता है, इतनी कोई भी प्राणी नहीं करता है। गाय-भैंसों को खत्म करके देश की अर्थव्यवस्था मिटाने के लिए झूँठे आँकड़े तो कोई भी पेश कर सकता है, चैक करने कौन जाएगा?

1. दूध को छोड़कर सिर्फ अन्न खाने की प्रेरणा देने वाले विगन समर्थकों को कोई जाकर पूछे कि, 1. विगन लोग जो अन्न खाते है एवं कपड़े पहनते हैं, वह खेत से ही आते हैं और खेत में एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक के जीवों की हजारों-लाखों की संख्या में हिंसा होती है, उसकी उपेक्षा वे लोग कैसे कर सकते हैं? और यदि हिंसा के नाम पर दूध छोड़ना है तो अन्न और कपड़े भी छोड़कर भूखे/नंगे रहने को तैयार हो?
2. खेत में पानी डेम से या बोरवेल से आता है, उस कुएँ को बनाने या डेम को बनाने में हुई हिंसा का क्या?
3. खेत में जो मोटर चलती है, वह बिजली से चलती हैं। बिजली उत्पन्न करने में हुई मछलियों की हिंसा का क्या?
4. खेत में जो पेस्टीसाईड्स छिड़का जाता है। जिससे करोड़ों जीव-जंतु मरते हैं, उसका पाप किसे लगेगा?
5. खेत में ट्रेक्टर चलाने से हुई हिंसा का क्या?
6. उन ट्रेक्टरों को चलाने के लिए जो डीज़ल लगता है, वह डीज़ल निकालने के लिए समुंद्र में बड़े-बड़े जहाजों के प्रोपलरों से पंचेन्द्रिय जीवों की हिंसा होती है, उसका क्या?
7. उन ट्रेक्टरों में से निकलते धुएँ से पर्यावरण को एवं प्राणी सृष्टि को जो नुकसान पहुंचता है, उसका क्या?
8. फसल को काटने के लिए एवं फसल को अलग-अलग अनेक स्थलों पर पहुँचाने के लिए जो यंत्र चलते हैं, उसकी हिंसा का क्या?
9. फसल के लिए जमीं पर रहे जंगलों को काटने एवं फसल लेने के बाद, नई फसल उगाने के लिए किसान के द्वारा खेत की जमीं जलाने की हिंसा का क्या?

हम 'विगन' वालों को सिर्फ इतना पूछना चाहेंगे कि ऐसी अनेक प्रकार की हिंसा से निर्मित अन्न, वे लोग कैसे खा सकते होंगे? या उनका अन्न आसमान से टपकता है?

हम 'विगन प्रेमी' से प्रश्न पूछते हैं कि 'माँस' नहीं खाने वाले 'कृत्रिम माँस' कैसे खा सकते हैं? यदि पिताजी को नहीं काट सकते हैं तो पिताजी की तस्वीर को कैसे काट सकते हैं?

यह भारतीय संस्कृति है कि, जीवित का सम्मान करने के साथ, जो सम्माननीय मृत्यु पाता है उसे भी सम्मान देते हैं। जो सम्माननीय हो, उसके प्रतीक को भी हम सम्माननीय मानते हैं। जो दया के योग्य हो वह प्राणी मरने के बाद भी दया के योग्य है, उसे खा नहीं सकते हैं। उसके प्रतीक स्वरूप कृत्रिम मांस को भी खा नहीं सकते हैं। आज जो कृत्रिम मांस खायेगा, कल वो असली मांस भी खाने लगेगा, क्योंकि उनके दिल से मांस की अरूचि खत्म हो जाती है।

कई सारे ट्रक-गाड़ी या बस के ड्राईवर (चालक) रोड़ पर मरे हुए मवेशी (पशु) के ऊपर से भी ट्रक नहीं चलाते हैं, अपना वाहन वे लोग साईड़ लेकर निकल जाते हैं। जो ड्राईवर मरे हुए प्राणी पर बिंदास चला सकता है, वो जिंदे प्राणी पर भी अपना वाहन चला सकता है, उसमें कोई शक नहीं है।

जो आज कृत्रिम मांस खायेगा,
वो कल सच्चा मांस खाने लगेगा
क्योंकि उसे स्वाद से ही मतलब है, संस्कृति से नहीं।

'विगनप्रेमियों' का अंतिम प्रश्न है कि

जैन धर्म में भी दूध इत्यादि के त्याग की महिमा बताई है, इसलिए दूध पीना पाप है। त्याग करना धर्म है। इसके सामने हमारा उत्तर है कि जैनधर्म अनेकान्तमय है। दूध का त्याग करने से जिनेश्वर प्रभु ने बताया तप जरूर होता है लेकिन परमात्मा ने दूध पीने का एकान्त निषेध भी नहीं बताया है, उल्टा दूध से बने, दही से बनी छाछ पीने की तो जगह-जगह पर बात लिखी है। खुद आदिनाथ प्रभु से लेकर महावीर स्वामी तक ने दूध और दूध से बनी चीजों का उपयोग सेवन एवं अपने तप के पारणों में किया है।

'घी' शब्द पश्चिमी भाषा एवं संस्कृति में मिलता ही नहीं है। वहाँ पर माँस सूचक शब्दों की भरमार ही देखने को मिलती है और 'विगन' का बवंडर पश्चिम देश से आयातित है, इसलिए समझदार को इशारा काफी है।

Scanned by CamScanner

राजा ऋषभ ने पशुपालन को एवं पशु उपयोग को राज्य एवं जीवन व्यवस्था में शामिल किया था, क्या विगन वाले भगवान आदिनाथ से भी ज्यादा ज्ञानी हैं?

अष्टापद पर्वत से उतर कर गौतम स्वामी जी ने 1500 तापसों को खीर से पारणा करवाया था, क्या गौतम स्वामी जी जैसे गणधर भगवंतों को 'विगन' समर्थक हिंसक एवं क्रूर मानेंगे?

भगवान महावीर के आनंद-कामदेव इत्यादि श्रावकों के पास हजारों लाखों गाय थी, क्या 'विगन' प्रचारक? भगवान महावीर के श्रावकों को जैन सिद्धांतों के विरोधी मानेंगे।

स्वयं गणधरों के द्वारा इन श्रावकों का जीवन दर्शन, 'उपासक दशांग' नामक आगम में कराया गया है। क्या 'विगन' जैन इन श्रावकों का जीवन निरूपित करने वाले गणधर भगवंतों को निर्दयी मानेंगे?

कितने सारे तीर्थों में हो रहे दूध प्रक्षाल को देखकर या घी से जल रहे दीपकों को देखकर इन 'विगन' प्रेमी के दिलों में कितना दर्द होता होगा?

हकीकत में जो शुद्धि का, भक्ति का, बुद्धि का, स्वास्थ्य का, शक्ति का, समृद्धि का एवं शांति का माध्यम है ऐसे द्रव्यों को, ऐसे उत्तम पदार्थों को, ऐसे उत्कृष्ट निमित्तों को अशुद्धि का, हिंसा का, पापों का, क्रूरता का, रोगों का, दु:खों का कारण मान लेना। माध्यम समझ लेना, वह सिर्फ और सिर्फ मूर्खता के अलावा कुछ भी नहीं है। ऐसी मूर्खता की जाल में आज के जैन साधु-साध्वी (अन्य संप्रदायों के) फँसते हुए नजर आने पर आश्चर्य भी हो रहा है।

एक जैन साध्वी को ऐसा बोलते हुए सुना कि 'जमीकंद खाने में कोई भी पाप नहीं है लेकिन गाय का दूध पीने में पंचेन्द्रिय की हत्या का पाप है।' तब मुझे बड़ा झटका लगा। क्या उस साध्वी ने जन्म लेते वक्त अपनी माँ का दूध पी कर अपनी माँ की हत्या कर दी? उस साध्वी ने क्या पंचेन्द्रिय का कत्ल देखा है? कत्लखाने का दृश्य देखा होता और दूध निकालते ग्वाले का दृश्य भी देखा होता तो तुलना कर पाते कि, कहाँ दूध और कहाँ खून।

मैं खुद भी 80/100 दिन तक दूध-घी-तेल इत्यादि छोड़कर आयंबिल करता हूँ। आसक्ति को नियंत्रित करने के लिए दूध का त्याग मैं भी जरूरी मानता हूँ मगर दूध के पीछे जो हवा खड़ी की गई है और जो हिंसा का डर दिखाया गया है वह बहुत बड़ा षड्यंत्र है। दूध पीने वाले को जिस प्रकार हिंसक बताया जा रहा है। जिस प्रकार अमरीका-लंदन इत्यादि देशों में रहे जिनालयों में दूध का अभिषेक वंद करवाया गया है। जिस प्रकार बड़ी-बड़ी संस्थाओं ने 'विगन' प्रचार में अति उत्साह से हिस्सा लेना शुरू किया है, यह देखते हुए मुझे इनका पर्दाफाश करना बहुत आवश्यक लगा है। दूध के विरोध में FAO और PETA जैसी संस्था एवं उन संस्था के पीछे वेटिकन सीटी।

अंतिम सत्य प्रसंग बताता हूँ। एक धार्मिक परिवार का बेटा ब्रिटेन में अपनी स्कूल ट्रिप में पिकनिक पर गया था। उसके सारे सहपाठी अपने साथ डिब्बा लाये थे और डिब्बे में नॉनवेज था, यह अकेला ही जैन था और उसके डिब्बे में वेज था। उसने साथ वाले का एक भी आइटम लेने से मना कर दिया और खड़ा हो गया, तब टीचर ने पूछा कि, 'तूं क्यों नॉन वेज नहीं खाता है?'

टीचर ने उल्टा सवाल भी साथ में पूछ लिया कि, 'यदि तूँ गाय का दूध पी सकता है, तो नॉन वेज खाने में क्या दिक्कत है? गाय का खून क्यों नहीं पी सकता?'

सामने उत्तर देने वाले उस लड़के ने पूछ लिया 'टीचर! आपने अपनी माँ का दूध पीया था?

यदि आप मम्मी का दूध पी सकते हो तो खून क्यों नहीं?'

दूध के प्रश्न में दूध का दूध, पानी का पानी कर दिया है।

एक लड़के ने अपने परिचित को कहा, मैंने एक साल पहले शादी की, मैं करोड़पति बन गया। सामने वाला परिचित कहता है, धन्यवाद..... कांग्रेच्युलेशन आप नसीबदार हो, मेरी भाभी सौभाग्यशाली है। उनके आने पर आप करोड़पति बन गये।

उस लड़के ने उस भाई की भ्रांति दूर करते हुए कहा कि, 'भाभी के आने से पूर्व मैं अरबपति था।'

जो लोग पूर्व में मांसाहार करते थे, उनके लिए कृत्रिम मांस शायद कम हिंसक होने से लाभकारी हो लेकिन जिन्होंने मांस खाया ही नहीं है, वे कृत्रिम मांस खाकर रोड़पति बनने की बेवकूफी ना करे। **विदेशी गद्दी से तो मेरी भारत माता की गोद अच्छी है, भले वो कैसी भी हो।**

इस आर.टी.आई. के लेख में मुझे जानकारी प्रदान करने वाले सभी स्रोतों का मैं तहेदिल से आभार प्रकट करता हूँ।
आचार्य देव श्रीमद्विजय जयसुंदर सूरि जी
आचार्य देव श्री अजयसागर सूरि. जी
श्री संजय भाई वोरा
श्री अरविन्दजी ओस्तवाल
प्रभुदास बेचरदास पारेख
आदर्श भारत नेटवर्क
National Institute of Health

Scanned by CamScanner